समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्ष:– 17 पृष्ठ:– 4 अंक :– 23 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

नयी सुबह की उजली किरणें – हितेश शंकर

दो दिन, अदालत के दो फैसले – समाज और राजनीति को दो भिन्न प्रकार की मुद्राएं। ले.कर्नल श्रीकांत पुरोहित की जमानत और एक झटके में तीन तलाक की बर्बर व्यवस्था पर अदालती चोट ने अरसे से खदबदाते कई प्रश्नों को सतह पर ला दिया। क्या अदालत ही आखिरी उपाय है। और यदि समाज साहस दिखाएगा तो भी क्या तुष्टीकारक, विभाजक राजनीति अपनी राह नही बदलेगी ? यह सवाल इसलिए जरूरी है क्योकि न्यायालय ने एक ऐसी दिशा में विधिसम्मत और साहसपूर्ण दस्तक दी है जिसकी ओर ताकते हुए भी तुष्टीकरण की माला फेरने वाली राजनीति की 'रूह कांपती थी। मालेगांव धमाके मामले में आरोपित किए गए कर्नल पुरोहित की जमानत इसलिए बड़ी घटना है कि इस मामले में जांच एजेंसियों की कार्यशैली पर भी सवाल उठे। महाराष्ट्र आतंकवाद निरोधक दस्ते के दावे न्यायालय में ढह गए। लेकिन कर्नल पुरोहित पर जांच के दौरान अत्याचार की जो कहानियॉ छनकर आ रही हैं,उनसे संकेत मिलता है कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार के दौरान जांच एजेंसियों पर कैसा दबाव रहा होगा। सेना में कार्यरत एक वरिष्ठ अधिकारी जो अपनी सूचनाओं और कार्यकलापों के बारे में सतर्कतापूर्वक वरिष्ठ अधिकारियों को सूचित करता रहा, उसे कुत्सित राजनीतिक मंशा रखने वालों ने नौ वर्ष तक जेल में रगड़ ही तो दिया। सलाखों के पीछे अत्याचारों का दौर चला और बाहर 'भगवा' आतंकवाद की झूठी नफीरी बजाई जाती रही। यह शब्द किसने गढ़ा। और क्यों सोनिया गांधी के सामने पी.चिदंबरम, दिग्विजय सिंह बिना तथ्यों के यह बात उड़ाते रहे। क्यों राहुल गांधी ने अमेरिकी राजदूत से कहा कि उन्हें 'हिन्दू' आतंकवाद से डर लगता है। यह कौन–सा डर था ? यह डर एक छलावा था एक हौवा खड़ा कर उससे बाकी समाज को डराने का पैंतरा। तुष्टीकरण की राजनीति के पाले में जनता को भेड़–बकरियों की तरह बांधे रखने की चाल। लेकिन सूचना, ज्ञान और तकनीक के दौर में यह चाल चली नही। बाजी पलट गई। अदालत के ताजा फैसलों से पहले ही, इस जनता ने झूठ और साजिश पर टिकी राजनीति की बाजी पलट ही तो दी। कहा है 'भगवा' आतंकवाद जो मुसलमानों को पीसने जा रहा थ। और कहा है उन्मादी भीड़ जिसका डर दिखाकर मुस्लिम समाज को अंधेरे और घुटन की बेड़ियों में जकड़े रखा गया। कहां है यह सब कहा है समाज को लड़ाने और महिलाओं का हक दबाने वाले ? जाहिर है, राजनीति का पैदा किया डर अब नहीं चलेगा। क्या मुस्लिम, भारतीय नहीं ? इस समाज का हिस्सा नही ? क्या मुस्लिम महिलाओं को 'तीन तलाक' के कहें–अनकहे संत्रास से मुक्ति नही मिलनी चाहिए ? इन फैसलों को भले आगे लंबा रास्ता तय करना हो लेकिन इससे इतना तो साफ हो ही गया कि सेकुलर राजनीति का डंका पीटने वालों के लिए भले यह समाज, ये लोग, इनके मुद्दे 'मोहरे' से ज्यादा महत्व रखता है। केंद्र सरकार की भी प्रशंसा करनी होगी जिसने तीन तलाक के मुद्दे पर मजबूती से जनभावनाओं को न्यायालय के समक्ष रखा। वैसे, अदालत ने तो पहले भी यही रूख दिखाया था। 32 बरस पहले शाहबानो ने भरपूर हिम्मत दिखाई थी। न्यायालय तब भी उस बुजुर्ग महिला के साथ खड़ा था किन्तु तब तुष्टीकरण की भुरभुरी –बदबूदार सियासत आड़े आ गई। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी आड़े आ गए। आज फैसले के बाद शाहबानो के 67 साल के बेटे, जमील अहमद, जब बताते हैं कि उनके परिवार से 15 मिनट की भेंट में राजीव गांधी का कहना यह था कि वे 'गुजारा भत्ता' लेने से इनकार कर दें, तो उस गिलगिली 'सेकुलर राजनीति' से परदा हट जाता है जो दशकों तक कांग्रेस की अगुआई और वामपंथी मिलीभगत के बूते चलती रही। तब की बात छोड़िए, आज भी राजनीति के जो चमकीले चेहरे महिलाओं के साथ उनके अधिकार और नागरिक समानता की लड़ाई में खड़े नहीं हो सकते, ऐसे पिलपिले नेताओं की जगह मजहबी पालेबंदियों में हो तो होती रहे, समतामूलक राजनीति और कड़े प्रशासनिक फैसलों की संकल्पभूमि में उनके लिए कोई जगह क्यों होनी चाहिए ? दरअसल, यह ऐसी बात है जो राजनैतिक प्रक्रिया के माध्यम से लोकतंत्र में अभिव्यक्त भी हो रही हैं। जनता ने झूठे नंबरदारों के सामने सिर नवाना बंद कर दिया है। जहां राजनीति सकुचाती है, वहा इस देश की न्यायपालिका संतुलित कर सकती है, यह बात एक बार फिर स्थापित हो गई। यही तो संविधान बनाते वक्त हमारे पुरखों की साध रही होगी।

> सेकुलर राजनीति का डंका पीटने वालों के लिए भले यह समाज,ये लोक,इनके मुद्दे 'मोहरे' से ज्यादा महत्व न रखते हों, न्यायपालिका के लिए अपने नागरिकों के अधिकार और उनके मध्य समानता का व्यवहार अत्यंत महत्व रखता है।

1 से 15 सितम्बर स्मरणीय दिन

3 सितम्बर :– स्व: श्री यादवराव जोशी का जन्मदिन (पूर्व सह–सरकार्यवाह)

5 सितम्बर :– पूर्व राष्ट्रपति स्व: श्री राधाकृष्णन की जंयती (शिक्षक – दिवस)

7 सितम्बर :– हिन्दी साहित्य के पुरोधा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जयंती

महत्वपूर्ण घटना

4 सितम्बर 1669 – औरंगजेब ने काशी – विश्वनाथ मंदिर का विध्वंश कर अवशेषों पर मस्जिद का मस्जिद का निर्माण कराया ।

11 सितम्बर 1893 – स्वामी विवेकानन्द का शिकागो विश्वधर्म संसद में ऐतिहासिक उद्बोधन।

14 सितम्बर – हिन्दी दिवस 15 सितम्बर :– तकनीकी विशेषज्ञ भारत रत्न डॉ. विश्वैश्रैया का जन्मदिन

जन्म दिवस (3 सितम्बर) पर विशेष

दक्षिण में संघ कार्य का सूत्रपात करने वाले यादवराव जोशी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नीव बनने वाले तपस्वी कार्यकर्ताओं में एक नाम स्व. यादवराव जोशी का भी आता है। दक्षिण में हिन्दू संगठन की अलख जगाने वाले यादवराव जी का जन्म अनन्त चतुर्दशी (3 सितम्बर 1914) को नागपुर के एक वेदपाठी परिवार में हुआ। पिता श्रीकृष्ण गोविन्द जोशी पौरोहित्य का कार्य करते थे। यादवराव जब 6 माह के थे तो उनकी मॉ परलोक सिधार गयी। पिता की निगरानी में यादवराव का लालन–पालन हुआ। यादवराव ने कुछ समय तक वेदाध्ययन करते हुए पिता के साथ पौरोहित्य का कार्य किया, किन्तु पौरोहित्य में मन नहीं लगता देखकर पिता ने उनका विद्यालय में दाखिला करवा दिया। यथा समय विद्यालय की शिक्षा पूरी की। विद्यालय जीवन से ही यादव राव ने संगीत गुरू श्री शंकर राव से गायन सीखना प्रारम्भ कर दिया।1927 में संगीत सीखने वाले कलाकारों का एक भव्य कार्यक्रम नागपुर के वेंकटेश सभागृह में रखा गया था। संगीत की नामचीन हस्तियाँ इस कार्यक्रम में मौजूद थी। इसी कार्यक्रम मेंसंघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी भी उपस्थित थे। बारह साल के यादव राव ने अपनी मधुर आवाज से उस कार्यक्रम में सबका मन मोह लिया। इसी कार्यक्रम में उन्हें 'संगीत बाल भास्कर' का सम्मान दिया गया। कार्यक्रम के बाद डॉक्टर जी यादव से मिले और उनकी पीठ थपथपाई। इस भेंट से उनका आगे का पूरा जीवन ही परिवर्तित हो गया।

डॉक्टर जी की इच्छा

इसी कार्यक्रम के उपरान्त यादव राव जी संघ शाखा में जाने लगे। संगीत साधना करके व्यक्तिगत जीवन में कीर्ति प्राप्त करने के बजाय अपना जीवन संघ कार्य में समर्पित करने के विचार मन को आकर्षित करने लगे थे। अब यादव राव डॉक्टर हेडगेवार जी के साथ रहने लगें एक बार डॉक्टर साहब बड़े उदास मन से मोहिते के बाड़े की शाखा में आये। उन्होंने सबको एकत्र कर कहा कि ब्रिटिश शासन ने वीर सावरकर की नजरबंदी दो वर्ष के लिए और बढ़ा दी है। अतः सब लोग तुरंत प्रार्थना कर शांत रहते हुए घर जायेंगे। इस घटना ने यादवराव के मन पर अमिट छाप छोड़ी और वे पूरी तरह से डॉक्टर जी के हो गये। शाखा का कार्य करते हुए यादवराव ने एम.ए.एल.एल.बी. तक की शिक्षा पूरी की। शिक्षा पूर्ण करते ही

उन्होंने संघ कार्य में अपना जीवन लगाने का निश्चय किया।

दक्षिण भारत में संघ

शुरू में यादवराव को झॉसी भेजा गया। दो वर्ष कार्य करने के बाद 1941 में उन्हें कर्नाटक प्रांत प्रचारक बना कर भेजा गया। इसके बाद वे दक्षिण क्षेत्र प्रचारक, अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख, प्रचार प्रमुख, सेवा प्रमुख तथा 1977 से 1984 तक संघ के सह सरकार्यवाह भी रहे। कर्नाटक में संघ के सुदृढ़ आधार को खड़ा करने में उनकी भूमिका वैसी ही थी जैसी भाऊराव जी की उत्तर प्रदेश में रही थी। कर्नाटक के बाद धीरे–धीरे उन्होंने सम्पूर्ण दक्षिण का कार्य अपने मजबूत कंधों पर ले लिया। अपने सहज, सरल और मिलनसार स्वभाव के कारण उन्होंने अनेक लोगों को संघ कार्य में पूरा समय लगाने के लिए प्रेरित किया। उनका मानना था कि – 'संघ कार्य का विस्तार करना है तो हमें समाज के दलित वर्ग में भी पहुँचना होगा।'

अद्भुत कार्यपद्धति

संघ कार्य को और अधिक विस्तार देने के लिए 'हिन्दू सेवा प्रतिष्ठान' संस्कृत प्रचार समिति' राष्ट्रोत्थान प्रकाशन' बाल गोकुलम' जैसे असंख्य उपक्रमों की कल्पना भी उनकी प्रेरणा से ही निकली। इसके साथ ही प्रांतीय स्तर पर स्वयंसेवकों का शिविर लगाने की योजना भी उन्होंने ही गुरू की। मितव्ययता का एक आदर्श उन्होंने कार्यकर्ता प्रचारकों के सामने खड़ा करके दिखाया।

विदेश में संघ कार्य

यादवराव जी ने संघ कार्य के विस्तार के लिए दक्षिण अफ्रीका,मॉरीशस, केन्या, नैरोबी, युगाण्डा जैसे अनेकों स्थानों की यात्राएं की। यादवराव जी का कहना था कि

'संसार में कहीं भी जाओं अपनी मातृभूमि – स्वदेश का स्मरण रखो। उनका यह भी मत था कि भारतवासी जहॉ भी रहे, वहॉ की उन्नति में उन्हें योगदान देना चाहिए। क्योकि हिन्दू पूरे विश्व को एक परिवार मानता है।

अविचल निष्ठा

सामान्य कद वाले यादवराव जी का जीवन वास्तव में प्रेरणादायी एवं सादगीपूर्ण था। पूज्य डॉक्टर जी जैसी विलक्षण संगठन कुशलता, वैसा ही प्रचण्ड आत्मविश्वास, अविश्रांत परिश्रम करने की क्षमता उनमें थी। अखण्ड राष्ट्र आराधना करते हुये जीवन के संध्या काल में वे अस्थि कैंसर से पीड़ित हो गये थे। 20 अगस्त 1662 को बैंगलूर संघ कार्यालय में ही उन्होंने अपनी जीवन यात्रा पूर्ण की।

कैसी कैसी सोच ?

ट्रेन में बैठे लोगों के आपसी झगड़े में एक व्यक्ति मारा जाता है तो वह नरसंहार कहा जाता है: सन 47 में पाकिस्तान में लाखों हिन्दू मार दिये गये सन 1984 में हजारों सिख दिल्ली एवं अन्य स्थानों पर मार डाले गये सन् 2002 में जिहादियों ने ट्रेन में 56 (छप्पन) हिन्दुओं को जलादिया क्या ये नरसंहार नही था ? कश्मीरी हिन्दुओं का सब कुछ छीन लिया गया लेकिन वे आतंकवादी नही बने। इसके उलट कश्मीरी मुस्लिमों को सबकुछ दिया फिर भी वे आतंकवादी बन गये।

पत्थर भी दो प्रकार का होता है:–

नेताजी की गाड़ी पर गिरे तो लोक तंत्र पर हमला जब जवानों पर गिरे तो अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला

गोरक्षकों पर गुस्सा, गोवध पर चुप्पी – शंकर शरण

आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार देश में सालाना कम से कम 32,000 हत्याये होती है । इनमें अधिकांश लोग निर्दोष होते है, लेकिन इस पर किसी नेता, बुद्धिजीवी को क्षुब्ध होते नही देखा जाता। इसलिये गोरक्षकों पर गुस्सा सच्ची चिंता नही, बल्कि प्रायोजित लगता है। फिर क्या कारण है कि कथित गोरक्षकों द्वारा की गई या बताई गई छिट–पुट हिंसा पर हर वर्ग के लोग आक्रोशित हैं ? संविधान की धारा 48 में कहा गया है कि गोवध रोकने के संबंध में राज्य कानून बना सकते है। लेकिन आज तक गोरक्षा सुनिश्चित नही हो पाई। गोरक्षा के क्षोभ का कारण यही है। इस अर्थ में उनका दुख और क्रोध वाजिब है, क्योकि वे एक संवैधानिक अनुशंसा को देखना चाहते हैं। गो– ब्राह्मण की रक्षा सदैव हमारे धर्म का अभिन्न अंग रही है! यह पूरी दुनिया में अभूतपूर्व है कि किसी देश के 80 प्रतिशत नागरिकों के धर्म की चिंता न की जाए, बल्कि उसकी उपेक्षा ही राजकीय– बौद्धिक नीति बन जाए! जरा आंख खोलकर दुनियां के देशों का व्यवहार देखें किस देश की न्याय–प्रणाली वहां की बहुसंख्यक जनता की धर्म – परंपरा की उपेक्षा करती है? भारत के सिवा कही नही। यही सारी समस्या की जड़ है। इस तथ्य का सम्मान करना चाहिये कि यहां हिन्दुओं ने गोरक्षा के लिये जितने बलिदान दिए, उसका कोई उदाहरण नही है। जो इसे मूखर्ता या अंधविश्वास समझते हैं, उन्हे जानना चाहिये कि विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद से लेकर गांधी जी की बातों तक, गाय के प्रति श्रद्धा में इतना कुछ लिखा –कहा मिलता है कि पूरे ग्रथांलय बन जाये। जिन्हे रूचि हो, वे रामेश्वर मिश्र 'पंकज' की पुस्तक ' सांस्कृतिक अस्मिता की प्रतीकः गोमाता' (दिल्ली, वॉयस ऑफ इण्डिया,भारत भारती, 2015) से प्रामाणिक जानकारी हासिल कर सकते है। इसमें वैदिक साहित्य से लेकर आज तक गोरक्षा पर तमाम ऐतिहासिक विमर्श का विवरण है और उन कुर्तकों और भ्रान्तियों का उत्तर भी हैं जो मार्क्सवादियों, भ्रमित आधुनिकतावादियों और सेकुलरों ने फैलाये हैं। यदि गाय के महत्व, आदर और भारतीय हिन्दु परंपरा से इसके संबंध पर ठोस तथ्यों एवं विद्वत तर्को से कुछ होना होता, तो 70 या 50 वर्ष पहले सब कुछ तय चुका होता। यहां बात शुद्ध और क्रूर राजनीति की है, जिसे दलीलों से नही जीता जा सकता । यह राजनीति हिन्दु धर्म, समाज, ज्ञान और परम्पराओं को नीचा मानने और बताने की है। अन्य सभी कारण दोयम हैं वरना जो लोग कूत्ते – बिल्लियों के प्रति प्रेम और अवारा कुत्तों के प्रति सद्भाव को भी सिद्धांत का प्रश्न बनाते है, वे गाय पर चुप्पी कैसे ले सकते हैं ? गोवध पर चुप्पी राजनीति विचार धारा से प्रेरित है। उस विचारधारा से जो सेकुलरिज्म के नाम पर हर हाल में इस्लामपरस्ती को आवश्यक मानती हैं इसलिये यह मसला उलझन भरा लगता है। भारत में गोरक्षा के नाम पर प्रश्न पहली बार सदियों पहले तब उठा जब यहां इस्लामी हमले शुरू हुये। उसके पहले यह कोई विषय नही था। वेद – पुराण , शिव – शक्ति, देव–पितर, बड़ –पीपल, गंगा – यमुना की तरह गो–ब्राह्मण भारत में सबकी श्रद्धा के पात्र थे। इसे भुलाकर बात करना घोर अन्याय या हिन्दु धर्म को जान बूझकर उपेक्षित करना है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि इस्लाम इस दृढ़ दद्देश्य से भारत आया था कि वह हिन्दु धर्म– संस्कृतिं का समूल विनाश करेगा। वह कई देशों की धर्म संस्कृतियों का नाश करने में सफल भी हुआ था। यहां भी उसी निश्चय को पूरा करने के अंग के रूप में गोहत्या और गोमांस का भरपूर उपयोग किया गया। भारत में इस्लामी सेनाएं अक्सर युद्ध में गायों को सामने रखकर लडती थी, ताकि भारतीय सैनिकों को रोका जा सके। मंदिरों को तोड़कर गाय का रक्त बहाया जाता था, ताकि हिन्दु फिर से वहां अधिकार न कर सके। आक्रमण वाले इलाके में कुएं, तालाब और नदी–नालों को गाय के रक्त से भ्रष्ट किया जाता था, ताकि हिन्दु प्यासे रह कर आत्मसमर्पण कर दे। असहाय हिन्दुओं के मुह में जबरन गोमांस ठूंस कर उन्हे मुसलमान बनाने के लिये विवश करना यहां इस्लामी शासन में सामान्य घटना थी। आततायी ब्राह्मणों और संयासियों की हत्या कर उनके मुह में गोमांस ठूसना कभी नही भूलते थे। कश्मीर में तीन दशक पहले तक यह सब हुआ है। क्षमा कौल के उपन्यास 'दर्दपूर' में इसका जीवन्त विवरण मिलता है। स्वयं मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा लिखा गया इतिहास गोवध के अंतहीन वर्णनों और इसके राजनीति उपयोग की चालों से भरा पड़ा है। डॉ भीमराव अंबेडकर ने लिखा था कि मुस्लिम नेता हिन्दुओं पर दबदबा बनाने के लिये गोहत्या और इसका प्रदर्शन करते है। वे आज के बारे में ही कह रहे थे। यह प्रमाण है कि यह विषय किस तरह हिन्दु–विरोधी राजनीति से जुड़ा है। उनके शब्दों में '' मजहबी उद्देश्य से गो– बलि के लिये मुस्लिम कानूनों में कोई जोर नही दिया गया है। जब मुसलमान मक्का मदीना के हज पर जाता है, ता गो–बलि नही करता है। परन्तु भारत में वे दूसरे पशु की बलि देकर संतुष्ट नही होते है।'' (डॉ. भीमराव आंबेडकर, 'संपूर्ण वाडमय', खण्ड 15, पृ. 267) यह प्रवृत्ति आज भी संभव है। 1947 में मुसलमानों के लिये अलग देश बना कर देने के बाद के भी गोवध बंद न करना एक गंभीर विभिषिका है। (इस विभिषिका में महान हिन्दु– ग्रन्थों को औपचारिक शिक्षा से बाहर कर देना, अंग्रेंजी भाषा को सत्ता का विशेषाधिकार देना और संगठित कन्वर्जन पर कड़ी रोक न लगाना भी जोड़ ले। तब हिन्दु समाज की दुर्दशा व पीड़ा का अनुमान होगा।) तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के सामने साधुओं ने गोवध बंद के करने के लिये अनशन किया था और फजीहत झेली थी। इंदिरा गांधी ने भी गोरक्षा आंदोलन कर रहे साधुओं पर गोलियां चल बायी थी। उसमें जिन लोगों ने जान दी, वे गुण्ड़े या मुर्ख, अंधविश्वासी नही थे। वे उस महान हिन्दु परंपरा के योद्धा थे जिन्होने विगत हजार वर्षो में धर्म और गौ–ब्राह्मण की रक्षा में बलिदान दिया है। यह सब उन्हे भी समझाना चाहिये जो गोरक्षा या आयोध्या,काशी, मथुरा जैसे विषयों को केवल दलील प्रचार और चुनाव मुद्दा बना कर भूल जाते है यां उसे ठण्डे बस्ते में डाल देते है। हिन्दु धर्म संस्कृति की रक्षा, उपयोगिता केवल भारत नही, वरन् पूरी मानवीय सभ्यता के प्रश्न हैं। इन्हे राजनीतिक मुद्दे बनाकर छोटा करना या दलबंदी का हिसाब करना भारी भूल रही है। पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती क्षेत्रों में इस्लामी आक्रांताओं का व्यंग नही सुनना चाहते, जो हर हिन्दु को दिन रात त्रस्त रखते है। वे कहते हैं, '' गोरू राखबि कैम्पे, टाका राखिब बैके, बोउ राखबि कोथाय ?'' (गायों को सीआरपीएफ कैम्पों में रखकर बचाओगे, रूपये बैंको में रखकर बचाओगे, अपनी स्त्रियों को कहा रखोगे ?) चूकि यह हिन्दुओं पर हृदय विदारक उत्पीड़न का मामला है, इसलिये तमाम नेता, बुद्धिजीवी इसे नही देखते। गोरक्षकों पर गुस्सा दिखाने और गोवध पर चुप्पी रखने में भी वही विडम्बना है। यदि मामला हिन्दुओं के दुःख और तबाही का हो, बुद्धिजीवी चुप्पी साध लेते हैं। प्रगतिवादी, वामपंथी सेकुलर लेखक, बौद्धिक जमात ने हिन्दु धर्म, हिन्दुत्ववादी राजनीति की निन्दा की और तमाम इस्लामी इतिहास, कुरीतियों, अजगाववाद और आतंकवाद समेत मुस्लिम राजनीति का हर संभव बचाव किया या चुप रहे। वह रूख अभि भी नही बदला है। हमे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि भारत में पिछले सौ साल से इस्लाम से संबंधित सामाजिक, राजनीतिक मुद्दों पर गोल–मोल बात या शॉर्टकट उपाय खोजने के भोलेपन ने हिन्दुओं और मुसलमानों का भारी

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

डॉ. हेडगेवार की सहभागिता ने आन्दोलन को गति दे दी

सेकुलर गिरोह का एक घिसा पिटा आरोप रहता है कि संघ के स्वयंसेवकों ने स्वतंत्रता आंदोलनों में भाग नही लिया। सच्चाई यह है कि स्वतंत्रता से पूर्व स्वयंसेवक जो प्रतिज्ञा लेते थे उसमें एक पंक्ति यह भी थी कि **'' अपने देश के स्वतंत्र कराने के लिये मैं स्वयंसेवक बना हूँ।''** संघ संस्थापक ड़ॉ हेडगेवार ने स्वयं अनेक सहयोगियों के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया था। भारत आंदोलन के समय तो सम्पूर्ण महाराष्ट्र में जत्थों की अगुवाई करने वाले स्वयंसेवक ही थे।ं गत 9 अगस्त को जब संसद में भारत छोड़ो आन्दोलन की हीरक जयंती मनायी जा रही थी तो सेकुलरवादियों ने फिर वही उक्त आरोप संसद में तथा अखबारों में लगाया। 9 अगस्त के ही 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में सम्पादकीय पृष्ट पर श्री राकेश सिन्हा का 'दिस डे, 75 इयर्स अगो' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ है। इसमें विद्धान टिप्पणीकार ने स्वयंसेवक के स्वतंत्रता आन्दोलन में सहभागी होने के प्रमाण दिये है, लेख के अंश कुछ इस प्रकार है – सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के निर्णय से (अंग्रेज) सरकार के सारे भ्रम दूर हो गये। मध्य प्रांत और बराड़ (उस समय का मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा गुजरात का क्षेत्र) पुलिस की पाक्षिक रपट में लिखा गया था, कि संघ– संस्थापक डॉ. हेड गेवार की सहभागिता ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में नई जान फूँक दी हैं उन्होने हजारों सत्याग्रहियें का नेतृत्व किया तथा एक साल के सश्रम कारावास की सजा भुगती। 5 अगस्त 1940 को भारतीय सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत केन्द्र सरकार ने संघ के गणवेश, संचलन व अन्य शारिरिक कार्यक्रमों पर प्रतिबंध लगा दिया। सैकड़ों स्वयंसेवक इनके विरोध में सत्याग्रह कर गिरफ्तारी दी। भारत छोड़ो आन्दोलन में संघ के भाग लेने से ब्रिटिश शासकों की कमर टूट गई। अगस्त 1942 में चेमूर और आष्टि में स्वयंसेवकों ने आंदोलन का नेतृत्व किया। पुलिस का दमन भी इन दो तहसीलों में अत्यधिक था। आजीवन कारावास तथा फॉसी की सजा पाने वालों में अधिकतर स्वयंसेवक ही थे। संघ की भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रियता ने ब्रिटिश सरकार की नींद उड़ा दी। सरकार में यह भय पैदा हो गया कि आजाद हिन्द फौज के साथ मिलकर कही सशस्त्र न चला दे।

वास्तविक इतिहास से देश को रखा गया दूर

''देश में हिन्दु समाज जिस दिन जातिवाद को त्यागकर एकत्र होगा, उस दिन विश्व की कोई भी शक्ति राम मंदिर निर्माण करने से नही रोक सकती।'' उक्त बातें बजरंग दल के राष्ट्रीय सह–संयोजक श्री सोहन सिंह सोलंकी ने कही। वे गत दिनों देहरादून के नगर निगम सभागार में विश्व हिन्दु परिषद् एवं बजरंग दल के स्थापना दिवस पर बोल रहे थे। उन्होने कहा कि भारत वर्ष का हर दिन एक त्यौहार के रूप में शुरू होता है। यहां होने वाले हर पर्व का एक उद्देश्य है, जो कही न कही सामाजिक समरस्ता से जुड़ा है। उन्होने कहा कि हम सबका दुर्भाग्य है कि पिछले 70 सालों में भारतवर्ष की जनता को आज तक यह नही पता चलने दिया गया कि बाबर, अकबर, औरंगजेब जैसे विदेशी लुटेरे सनातन भारतीय सभ्यता के सबसे बड़े दुश्मन और बर्बरता के उदाहरण रहे है। भारत में जयचंदों की बड़ी संख्या में उन्हे नायक बनाकर शिक्ष के क्षेत्रों में विकसित किया और महाराणा प्रताप, बंदा वीर बैरागी और वीर सावरकर जैसे देश भक्तों को शिक्षा और समाज से लुप्त कर दिया गया। इससे समाज को इन महान लोगों के जीवन से प्रेरणा लेने का मौका नही मिला। उन्होने कहा कि भारत की अखण्ड़ता पर प्रश्नचिन्ह लगाने वाले भारत को उच्च शिखर पर जाते नही देख सकते। ऐसे लोग राष्ट्रद्रोही है जो यहां का अन्न–जल ग्रहण करते है लेकिन भारत माता की जय बोलने पर उन्हे आपत्ति है। ऐसी मानसिकता के लोग कही भारत के हितचिंतक नही हो सकते।

विविधता में एकता हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि

''भाई–बहन द्वारा रक्षा बन्धन उत्सव मनाने की कल्पना का विचार ही अत्यंत महान है, ऐसी कल्पना दुनिया की किसी अन्य संस्कृति एवं समाज में विद्यमान नही है। भारत में हिन्दुतव की कल्पना ऐसी है, जो मनुष्य एवं समाज को आपस में जोड़ने का कार्य करती है।'' उक्त वक्तव्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख ड़ॉ मनमोहन वैद्य ने दिया। वे पिछले दिनों काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के स्वतंत्रता भवन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आयोजित रक्षाबंधन उत्सव को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होने कहा था कि हिन्दुत्व को बदनाम करने की साजिश चल रही है। कुछ अन्य विचार धारा के लोग हमें हिंसक और असहिष्णु कह रहे हैं। यानी भारत में भारत की छवि खाराब करने का प्रयास प्रगतिशीलता का परिचायक माना जा रहा है। जबकि दुनिया में हमारी पहचान हिन्दुत्व, भारतीय चिंतन एवं दर्शन पर आध ारित हैं और दुनिया को इसकी आवश्यकता इसी रूप में है। उन्होने कहा कि हम सबकी पहचान एक ही है, इस देश की विविधता में एकता ही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धी है। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुये संत रविदास मंदिर, गोवर्धनपुर के महंत पूज्य श्री भारत भूषण ने कहा कि माताओं – बहनों की सुरक्षा सामाजिक दायित्व है। यह संचार तेरे मेरे के भाव से दुखी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरिश चन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि भारत हजारों हजार वर्ष पुराना राष्ट्र है, चिर पुरातन शाश्वत नियमों का एक से दूसरी पीढी में स्थान्तरण होता रहा है। इसलिये हमारा सनातन समाज एक दूसरे को समर्पण का संदेश देता है। रक्षाबंध ान का यह उत्सव हमारे समाज को जोड़ने का कार्य करता है।

पृष्ठ क्रं. 3 का शेष भाग

अहित किया है। वस्तुतः जब हिन्दु नेता , बुद्धिजीवी आदि इस्लामी राजनीति से जुड़ी समस्याओं व उसके सिद्धांत, व्यवहार और सहज रूप से उस पर विमर्श आरंभ करेंगे, तभी मुसलमानों के साथ सार्थक संवाद शुरू होगा। इसी से मुसलमानों से जीता जा सकता है। तब गोवध रोकने का उपाय भी सरलता से निकल जायेगा।

सूचना

कृपया आप ~~अपना ई~~–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने - बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com